ISSN 0973-8541, HUMANITIES AND DEVELOPMENT, VOL.19, No.3, July – Sept. ,2024/28

महात्मा गांधी के दृष्टिकोंण में व्यावसायिक शिक्षा

आरसी प्रसाद झां, **अनुसंधान सहयोगी, भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण, पश्चिमी क्षेत्रीय केन्द्र, प्रतापनगर, उदयपुर–313001 (राज.)**

https:// 10.61410/had.v19i3.201

वर्तमान शोध का मूल उद्देश्य है कि महात्मा गांधी के दृष्टिकोण में व्यावसायिक शिक्षा को जाना जाए। वर्तमान शोध आलेख द्वितीयक स्रोत पर आधाारित है। वर्तमान अध्ययन के परिणाम इंगित करते हैं कि गांधी जी स्वावलंबन की शिक्षा देना चाहते थे। उनके दृष्टिकोण में ग्रामीणों की शिक्षा में कृषि, कताई, बढईगिरी, कुटीर शिल्प, हस्तशिल्प, हथकरघा, चरखा चलाना, आदि समावेश हो। वे ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में औद्योगिक शिक्षा के पक्षधर थे। महात्मा गांधी शरीर में उत्पन्न होने वाली गति को सर्वोपरि मानते थे। गांधी जी चाहते थे कि गांव के अनुसार उपयोग में आने वाले गणित, भूगोल, ग्राम इतिहास, आदि पाठ्य क्रम में हो। गांधी जी शिक्षकों द्वारा दिए जा रहे अनाप–शनाप एवं अनचाही शिक्षा के खिलाफ थे जो कि आगे चलकर बच्चों को निरीहमशीन बना दे। गांधी जी का कहना था कि बच्चों की शिक्षा शारीरिक काम पर आधारित हो और यह कार्य शिक्षक के देख–रेख में हो। गांधी जी लड़के–लड़कियों को पढाई के दौरान ही सीने–पिरोने और रसोई का काम सीखने व बाप–दादा के काम धंधा का काम सीखने व अर्थोपार्जन के लिए कहते थे। गांधी जी चाहते थे कि डिग्री मिलने के बाद किसी को भी आगे अतिरिक्त ज्ञान व प्रशिक्षण हासिल नहीं लेना पड़े। बल्कि अपनी प्राप्त शिक्षा के समय प्राप्त ज्ञान व प्रशिक्षण से गुजारा कर ले और भविष्य में ये ज्ञान कभी भी अनुपयोगी साबित नहीं हो।

कुंजी शब्द : कृषि, चरखा, व्यवसाय, हथकरघा, हस्तशिल्प

व्यावसायिक शिक्षा वह शिक्षा है जो लोगों को कारीगर, व्यापारी, तकनीशियन, आदि के रूप में काम करने के लिए तैयार करती है। व्यावसायिक शिक्षा किसी व्यक्ति को उस व्यक्ति को अपेक्षित कौशल के साथ लाभकारी रोजगार या स्वरोजगार के लिए तैयार करने के लिए दी जाती है। समान्यतः व्यावसायिक शिक्षा माध्यमिक शिक्षा के पश्चात या आगे की शिक्षा या उच्च शिक्षा स्तर पर होती है। व्यावसायिक शिक्षा प्राथमिक स्तर व इसके उत्तरोत्तर शिक्षा स्तर पर कार्यानुभव या कुछ बहुउपयोगी वस्तु बनाने के लिए प्रशिक्षित करता है। व्यावसायिक शिक्षा अक्सर व्यापार/व्यावसायिक विद्यालयों, व्यावसायिक संस्थानों, तकनीकी स्कूलों, तकनीकी संस्थानों, औद्योगिक संस्थानों (आई.टी.आई.), व्यावसायिक विश्वविद्यालयों, प्रौद्योगिकी संस्थानों, पॉलिटेक्निक संस्थानों, आदि द्वारा प्रदान की जाती है। लगभग सभी व्यावसायिक शिक्षा की कक्षा में या कार्यस्थल पर दी जाती है। ऐसे संस्थानों में छात्र प्रशिक्षकों या पेशेवरों से व्यावसायिक ज्ञान एवं कौशल सीखते हैं। अभी हाल के वर्षो में ऑन लाइन व्यावसायिक शिक्षा की लोक प्रियता बढ़ी है जिससे छात्रों के लिए स्थापित पेशेवरों से संबंधित व्यवसाय व कार्य का कौशल और सॉफ्ट स्किल भी सीखाया जाता है।

महात्मा गांधी का जन्म 2 अक्टूबर 1869 को गुजरात के पोरबंदर में जन्म हुआ था एवं इनका निधन नई दिल्ली के बिड़लाभवन (बिड़ला हाउस) में 30 जनवरी 1948 को हुआ था। गांधी जी कई

दशकों तक अनेक पत्र–पत्रिकाओं का संपादन किए जिसमें नवजीवन, हरिजन, इंडियन ओपिनियन, यंग इंडिया आदि थे। पत्र लेखन के अलावा गांधी जी ने 1909 ई. में हिंद स्वराज, 1924 ई. में दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह का इतिहास, 1929 ई. में सत्य के प्रयोग (आत्मकथा), 1929 ई. में ही गीता माता, 1930 ई. में अनासक्ति योग, आदि लिखा। "संयुक्तराष्ट्र महासभा" में यह घोषणा की गई थी कि प्रति वर्ष 2 अक्टूबर को" अंतर्राष्ट्रीय अंहिसा दिवस" के रूप में मनाया जाएगा। आज जितने भी नोट इस्तेमाल में हैं उन पर महात्मा गांधी का चित्र है। 1996 में यूनाइटेड किंगडम ने डाक टिकेट की एक श्रृंखला महात्मा गाँधी के शतवार्षिक जयंती के उपलक्ष्य में जारी की। यूनाइटेड किंगडम के लंदन एवं अन्य शहरों में कई स्थानों पर गांधी जी की प्रतिमाएं लगी हैं। यूनाइटेड किंगडम में प्रत्येक वर्ष 30 जनवरी को "राष्ट्रीय गाँधी स्मृति दिवस" मनाया जाता है। भारत सहित अन्य देश में भी अहिंसा एवं शांति दिवस मनाया जाता है। संयुक्तराज्य अमेरिका के न्यूयार्क, अटलांटा, वाशिंगटन, आदि में भी गांधी जी की प्रतिमाएं लगी हैं। इसी प्रकार, दक्षिण अफ्रीका सहित अन्य देशों में भी गांधी जी प्रतिमायें लगी हैं।

गांधी जी के अनुसार, "शिक्षा से मेरा अभिप्राय बालक और मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा का सर्वागीण एवं सर्वोत्कृष्ट विकास होना चाहिए। गांधी जी के शैक्षिक चिंतन में व्यावसायिक शिक्षा निहित है। अतः इसी को ध्यान में रखते हुए वर्तमान शोध का मूल उद्येश्य रखा गया है कि महात्मा गांधी के दृष्टिकोण में व्यावसायिक शिक्षा को जाना जाए।

शोध विधि

वर्तमान शोध आलेख द्वितीयक स्रोत पर आधाारित है एवं इसके लिए महात्मा गांधी द्वारा लिखित पुस्तक एवं इनके स्वप्रकाशित समाचार पत्र, अन्य विद्वान द्वारा महात्मा गांधी के संबंध में लिखे गए पुस्तक एवं इंटरनेट से प्राप्त सामग्री को इस आलेख लेखन में किया गया है। महात्मा गांधी द्वारा स्वलिखित पुस्तक विपेज स्वराज, सच्ची शिक्षा, रचनात्मक कार्य एवं द स्टोरी ऑफ माई एक्स पेरी में ट्सविथ ट्रुथ एवं उनके स्वलिखित पत्र–पत्रिका नव जीनव, हरिजन एवं यंग इंडिया वर्तमान अध्ययन के आधार स्तंभ रहे हैं। इसके अलावा, वर्तमान स्थिति से परिचय कराने व अन्य संबंधित जानकारी के लिए इंटरनेट सामग्री का प्रयोग किया गया है।

विश्लेषण एवं विवेचन

ग्रामीणों के लिए व्यावसायिक शिक्षा की आवश्यकता एवं महत्व

गांधी जी[(2)] कहते थे कि ग्राम कार्यकर्ता ग्रामीणों को प्रशिक्षित कर आत्म निर्भर बना सकते हैं। गांधी जी ग्रामीणों को कृषि एवं हस्तशिल्प के माध्यम से स्वावलंबन की शिक्षा के पक्षधर रहे हैं। उन्होंने गाँव की शिक्षा में कृषि एवं हस्तशिल्प को अनिवार्य माना है। वे कहते थे कि हमें ग्रामीणों को प्रचुर मात्रा में मेहनती बनाना है। इनमें जीवन में कुटीर शिल्प के शिक्षा–प्रशिक्षण का समावेश हो। गांधी जी कहते थे कि शिक्षा ग्रामीणों की आवश्यकता के अनुसार होना चाहिए।वे कहते थे कि ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में औद्योगिक शिक्षा दिया जाना चाहिए व आवश्यकता पड़े तो पंचायत स्तर पर या बहुग्राम

साझा कर भी इसके प्रशिक्षण की व्यवस्था किया जाना चाहिए। ये ग्रामीण शिक्षित होकर अपनी आय भी दोगुना कर सकते हैं। गांधीजी उस दौर में एक बार कहे थे कि हथकरघा उद्योग मरणासन्न स्थिति में है और वे बुनकरों की इस दयनीय स्थिति पर बहुत व्यथित हुए थे। उन्होंने कहा कि इसे जीवित रखने के लिए इन्हें इस में शिक्षित करने की आवश्यकता है और यही शिक्षा इनके लिए वांछित दिशा में बहुत कुछ कर सकती है। उन्होंने नई तालीम में हस्तशिल्प को लोकप्रियि रूप से जोड़ने के लिए कहा था। गांधी जी कहते थे कि यदि हम ग्रामीणों की आवश्यकताओं के अनुरूप सर्वोत्तम शिक्षा प्रदान करना चाहते हैं तो हमें ऐसा करना चाहिए कि विद्यापीठ को गाँवों तक ले जायें। गांधी जी विलेज स्वराज में स्वयं लिखत हैं कि शिक्षा की धुरी और शिक्षा के मुख्य केंद्र में ग्रामीण हस्तशिल्प की शिक्षा की आवश्यकता है।

गांधी जी ने विलेज स्वराज में बताया है कि बुनियादी प्रशिक्षण के बिना ग्रामीणों को शिक्षा के लिए तरसना पड़ रहा है। वे चाहते थे कि शहरों से आये कार्यकर्ताओं को गांव की मानसिकता विकसित करनी होगी और ये कार्यकर्ता ग्रामीणों के जीवन पर अपना विचार नहीं थोपेंगे बल्कि ग्रामीण परिवेश के अनुसार ग्रामीणों की जीवन शैली के अनुसार प्रशिक्षित करेंगे। वे गांवों में रहने वालों को शिक्षित करना अनिवार्य मानते थे। गांधी जी ग्रामीणों के लिए व्यवस्थित और लाभप्रद ढंग से काम करने के लिए प्रेरित करने वाली शिक्षा को उत्तम मानते थे। वे ग्रामीणों की शिक्षा के लिए गांवों से जुड़े उद्योगों पर प्रशिक्षित करना चाहते थे। गांधी जी का कहना था कि सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा ग्रामीणों को शिक्षित करने का उद्येश्य होना चाहिए। वे ग्रामीण किसानों को खेती बाड़ी के लिए अधिक बुद्धिमत्तापूर्ण शिक्षित होने के बारे में बताया। गांधी जी किसानों को ताजी फसल उगाने के लिए प्रेरित करने के लिए प्रशिक्षण देने कहते थे। वे चाहते थे कि किसान केले, आलू, चुकंदर, रतालू और सूरन, कद्दू, आदि को अच्छी ढंग से खेती करना सीख लेंगे तो ये गरीब किसान अज्ञानता से बाहर निकल सकते हैं और वैज्ञानिक ढंग से खेती कर अच्छी पैदावार कर सकते हैं।

गांधीजी का कहना था कि ग्रामीणों को पशु संरक्षण में भी प्रशिक्षित किए जाने की आवश्यकता है। वेडेयरी और चमड़े (टेनरी) के कार्यों के लिए भी ग्रामीणों को इस क्षेत्र में प्रशिक्षित होने के लिए कहते थे। गांधी जी का कहना था कि ग्रामीणों को शिक्षित करने के लिए शिक्षा आकर्षक होनी चाहिए। गांधी जी कहते थे कि यदि ग्रामीण शिक्षित होते हैं तो किसी न किसी उद्योग को अपनाने के लिए प्रेरित हो सकते हैं। गांधी जी कहते थे कि कार्यकर्ताओं को गाँव की मानसिकता के अनुसार उनमें वैज्ञानिक सोच विकसित करनी होगी और ग्रामीणों को उनके तरीके से जीने की कला सीखानी होगी। गांधी जी का कहना था कि सबसे महत्वपूर्ण कार्य ग्रामीणों को शिक्षित करना है।[(2)] वे चाहते थे कि शिक्षा गांव (देहात) तक अवश्य पहुंचना चाहिए।

व्यावसायिक शिक्षा की विषय वस्तु व पाठ्यक्रम

गांधी जी के दृष्टि कोण में वास्तविक शिक्षा किताबों से नहीं हो सकता है बल्कि कुछ कर व कुछ काम सीख कर ही वास्तविक शिक्षा प्राप्त की जा सकती है। महात्मा गांधी का कहना था कि सच्ची शिक्षा वही है जिसमें बुद्धि और शरीर एक साथ काम करे। महात्मा गांधी के अनुसार, शारीरिक

अंगों का व्यायाम और हाथ, पैर, आंख, कान, नाक, आदि का उपयोग ही सही शिक्षा है। अर्थात् महात्मा गांधी शरीर में उत्पन्न होने वाली गति को सर्वोपरि मानते थे। उन्होनें ऐसे शिक्षा को निरर्थक बताया जिसमें शारीरिक गति की गुंजाइश नहीं हो। गांधी जी कहते थे कि शिक्षा ऐसी हो कि शिक्षा पाने में लोगों में हृदय, बुद्धि एवं शारीरिक अंगों का प्रयोग हो। वे मस्तिष्क के साथ–साथ अपने हाथ की पांचों अंगुलियों को शिक्षा में उपयोग के लिए बताते थे। वे कहते थे कि मन ही सब कुछ है और हाथ–पैर कुछ नहीं है। ऐसा हमें कभी भी नहीं सोचना चाहिए। वे कहते थे कि जो लोग अपने हाथों किसी भी प्रशिक्षण नहीं करना चाहते हैं, वह शिक्षार्थी हो ही नहीं सकता है। वे शिक्षा को सामान्य रट से दूर रखना चाहते थे।

गांधी जी एक उदाहरण देकर समझाते हैं कि लोगों में कताई, बढई गिरी, कृषि, आदि उपयोगी व्यवसायों में और अधिक शिक्षित किया जाए तो यह शिक्षा उसके हृदय में अंगीकार कर लेगी। गांधी जी लोगों के दैनिक जीवन के गणितीय व अन्य ज्ञान को उसके कार्य से जोड़कर शिक्षित करना चाहते थे। गांधी जी चाहते थे कि गांव के अनुसार उपयोग में आने वाले गणित, भूगोल, ग्राम इतिहास, आदि ग्रामवासी के शिक्षा का पाठ्यक्रम हो।

महात्मा गांधी के विचार में बुद्धि पूर्वक किया जाने वाला श्रम ही सच्ची शिक्षा है। अक्षर ज्ञान हाथ की शिक्षा के बाद आना चाहिए। वे कहते हैं कि अक्षर ज्ञान से जीवन का सौंदर्य बढ जाता है। बच्चों की ऐसी शिक्षा हो कि वे स्वयं दिलचस्पी लें न कि उन पर लादे जायें। गांधी जी कहते थे कि नौ वर्ष के बाद आरंभ होने वाली शिक्षा स्वावलंबी होनी चाहिए। गांधी जी शिक्षा की शुरूआत वर्णमाला के क्रम से प्रारंभ नहीं कर उपयोगी ज्ञान के साथ उपयोग को मानते थे। वे रोज उपयोग होने वाले ज्ञान के पक्ष में थे। गांधी जी कहते थे कि बच्चों के सोलहवीं वर्ष तक लोकोपयोगी व स्थानीय इतिहास, भूगोल, वनस्पति, गणित, साहित्य, भूमिति व बीज गणित का कार्य साधक ज्ञान हो जाना चाहिए। गांधी जी ऐसी शिक्षा को बेकार मानते थे जिन पुस्तकों से उन्हें दैनिक उपयोग की सामग्री नहीं मिलती हो। गांधी जी बच्चों को जबरन सीखाने के विरूद्ध थे और इसके स्थान पर पढाई में रस लाने व खेल–कूद के माध्यम से पढाने पर अधिक जोर देते थे।

गांधी जी कहते थे कि बच्चों में स्वावलंबन की आदत डालनी चाहिए। वे इसके लिए वाद–विवाद, चरखा कार्य, आदि कराना चाहते थे। गांधी जी छात्रों के लिए औद्योगिक तालीम के पक्षधर थे। गांधी जी छात्रों के इच्छा और शक्ति के अनुसार पढाई कराना चाहते थे। वे तोते के रट्ट नहीं बनाना चाहते थे। गांधी जी लड़कों और लड़कियों से अनुरोध करते थे कि तुम्हारा सारा पांडित्य और शास्त्रों का अध्ययन बिल्कुल बेकार होगा, यदि तुम उनकी शिक्षाओं को अपने दैनिक जीवन में नहीं उतार सके। गांधी जी के दृष्टिकोण में शिक्षा ऐसी होनी चाहिए कि अक्षर ज्ञान से पहले औजार चलाना पहले सीखें। महात्मा गांधी का कहना है कि सच्ची शिक्षा हाथ, पैर, आंख, नाक, आदि शरीर के अंगों के ठीक अभ्यास और शिक्षण से होनी चाहिए। गांधी जी के दृष्टिकोण में हाथ की तालीम से तात्पर्य है कि ऐसे सामान बनेजिसे बाजार में बेची जा सके। महात्मा गांधी उपयोग उद्योग को सीखाने के पक्षधर थे। गांधी जी चाहते थे कि हमारे बच्चों की ऐसी पढाई (पाठ्यक्रम) नहीं हो कि वे आगे जाकर परिश्रम

का तिरस्कार करने लगे और निकम्मा बन जाए।जो बच्चे शारीरिक परिश्रम को नापन्दगी की दृष्टि से देखते हैं ऐसे बच्चे को गांधी जी अनुचित मानते हैं।

इंजीनियरिंग की पढाई के लिए गांधी जी चाहते थे कि उद्योग व मिल संघ के अनुकूल इंजीनियरिंग की पढाई व प्रशिक्षण हो। वाणिज्य, कला, औषधि (चिकित्सा विज्ञान), खेती की पढाई की कॉलेज स्वावलंबी हो व पृथक हो। खेती की पढाई के कॉलेज के छात्रों में गांधी जी पाए कि इन विद्यार्थियों में इन का ज्ञान उपरी है और वे ऐसे छात्रों में व्यवहारिकता की कमी पाया। गांधी जी उच्च शिक्षित व्यक्ति से उम्मीद करते थे कि डिग्री मिलने के बाद आगे उन्हें आगे तजुरबाहा सिल नहीं करना पड़े। गांधी जी उच्च शिक्षा (विशेषकर कॉलेज शिक्षा) में कहते थे कि हमारी उच्च शिक्षा राष्ट्रीय आवश्यकताओं को पूरा करने के अनुरूप होना चाहिए। उनका मानना था कि मैकेनिकल एवं अन्य इंजीनियरों को डिग्री मिलने से पहले ही विभिन्न उद्योगों व उससे संबंधित प्रशिक्षण दे दिया जाना चाहिए।

गांधी जी कहते थे कि हमारी शिक्षा पद्धति ऐसी होनी चाहिए कि प्राथमिक शिक्षा प्राप्त लड़के और लड़कियों को अपनी रोटी कमाने के लिए तैयार किया जाना चाहिए। गांधी जी स्पष्ट कहते हैं कि शिक्षा में ऐसी गुण हो कि व्यवसाय व रोजगार की गारंटी देने वाला हो। गांधी जी कहते थे कि बच्चे की शिक्षा की शुरुआत उसे उपयोगी हस्तशिल्प सिखाकर की जानी चाहिए और उसे प्रशिक्षण शुरू करने के क्षण से ही उत्पादन करने में सक्षम बनाया जाना चाहिए। गांधी जी प्रत्येक स्कूल को स्वावलंबी बनाने का मार्ग मानते थे। गांधी जी सच्ची अर्थशास्त्र एवं नैतिक शिक्षा के भी समर्थक थे। वे कहते थे कि अर्थशास्त्र पढने से हमें आर्थिक गणणा में मददगार होगा वहीं नैतिक शिक्षा पढने से उत्तम नैतिकता व सच्ची आचरण को पवित्र करेगा। वे कहते थे हमारे व्यवसाय का उनकी शिक्षा से सीधा संबंध होना चाहिए।

शिक्षक एवं प्रशिक्षक के लिए व्यावसायिक शिक्षा की आवश्यकता एवं महत्व

गांधी जी कहते थे कि हमें शैक्षिक संस्थान को एक प्रशिक्षण विद्यालय में परिवर्तित करना चाहिए ताकि हम शिक्षकों को व्यवहारिक प्रशिक्षण देने में सक्षम हो सकें ताकि वह ग्रामीणों की जरूरतों को पूरा कर सके। साथ ही, गांधी जी चाहते थे कि शिक्षकों को संबंधित ग्रामीण पृष्ठ भूमि, संस्कृति एवं उस ग्राम की व्यावसायिक जरूरतों की भी जानकारी होनी चाहिए। महात्मा गांधी का कहना था कि शिक्षकों को अपने हमें हाथ–पांव का उपयोग करने के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए। वे शिक्षकों से अपेक्षा करते थे कि उपलब्ध सामग्री से अपना दैनिक पाठ खुद तैयार करें। गांधी जी शिक्षकों द्वारा दिए जा रहे अनाप शनाप एवं अनचाही शिक्षा के खिलाफ थे जो कि आगे चल कर बच्चों को निरीहमशीन बना दे। गांधी जी का कहना था कि बच्चों की शिक्षा शारीरिक काम पर आधारित हो और यह कार्य शिक्षक के देख रेख में हो। वे कहते थे कि शिक्षक बच्चों को बचपन से ही परिश्रम कराना सिखाए।

गांधी जी कहते थे कि एक विशेषज्ञ प्राप्त व्यक्ति को भीहर क्षेत्र का सामान्य अनुभव अवश्य होना चाहिए। वे उदाहरण देकर कहते हैं कि एक जीव विज्ञानी के रूप में बनने के लिए अच्छे

जीवविज्ञानी को जीव विज्ञान, बुनियादी शिक्षा के अलावा कई अन्य विज्ञान भी सीखने चाहिए। वे कहते हैं कि यदि इसे एक विज्ञान के रूप में माना जाए तो यह हमें सीखने के अनंत माध्यमों में लेजाता है।

विद्यार्थी के लिए व्यावसायिक शिक्षा की आवश्यकता एवं महत्व

गांधी जी छात्रों को अपील करते थे कि वे खुद ऐसा करें जिससे वे आर्थिक प्रगति कर सकें। गांधी जी छात्रों से अपेक्षा करते थे कि वे लोग अध्ययन काल में श्रम करें व पढाई का पूरा या आंशिक खर्च स्वयं अर्जन करें। वे लड़के–लड़कियों को पढाई के दौरान ही सीना–पिरोना और रसोई का काम सीखने व बाप–दादा के काम धंधा का काम सीखने के लिए कहते थे। गांधी जी का कहना था कि महिलाओं को गृह व्यवस्था, बच्चों के देखभाल एवं उनकी खुद की शिक्षा के लिए शिक्षित होने की आवश्यकता है।

महात्मा गांधी बताते हैं कि भारत में संस्थाओं द्वारा अपनाई गई शिक्षा को मैं शिक्षा नहीं कहता क्योंकि उसमें मानवता का पाठ नहीं होता है। गांधी जी वयस्क (प्रौढ सहित) शिक्षा के पूर्ण समर्थक थे। गांधी जी वयस्क शिक्षा के लिए पुस्तकीय ज्ञान के स्थान पर चरखा काटने के प्रशिक्षण को सही बताया और कहा कि चरखा काटना उनके लिए अर्थोपार्जन का जरिया बन सकता है। गांधी जी ग्रामीण कार्यकर्ता को वयस्क शिक्षा देने के लिए कहते थे। गांधी जी प्रौढों के लिए अक्षर ज्ञान ही शिक्षा नहीं मानते थे बल्कि साधारण ज्ञान को भी शिक्षा का आधार मानते थे। गांधी जी के दृष्टिकोण में प्रौढ शिक्षा के अंतर्गत कताई व उद्योग प्रशिक्षण का स्थान होना चाहिए।

निष्कर्ष

गांधी जी के शैक्षिक विचार में व्यावसायिक शिक्षा निहित है। गांधी जी ग्रामीणों को कृषि एवं हस्तशिल्प के माध्यम से स्वावलंबन की शिक्षा के पक्षधर रहे हैं। गांधी जी चाहते थे कि ग्रामीणों के शिक्षा में कुटीरशिल्प, हस्तशिल्प, हथकरघा, कृषि, आदि के शिक्षा–प्रशिक्षण का समावेश हो। महात्मा गांधी का कहना है कि ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में औद्योगिक शिक्षा दिया जाए। गांधी जी हथकरघा उद्योग एवं चरखा को उपयोगी ज्ञान मानते थे। महात्मा गांधी शरीर में उत्पन्न होने वाली गति को सर्वोपरि मानते थे। वे रोज उपयोग होने वाले ज्ञान के पक्ष में थे।गांधीजी एक उदाहरण देकर समझातेहैंकिलोगों में कताई, बढई गिरी, कृषि, आदि उपयोगी व्यवसायों में और अधिक शिक्षित किया जाए तो यह शिक्षा उसके हृदय में अंगीकार कर लेगी। गांधी जी लोगों के दैनिक जीवन के गणितीय व अन्य ज्ञान को उसके कार्य से जोड़कर शिक्षित करना चाहते थे। गांधी जी चाहते थे कि गांव के अनुसार उपयोग में आने वाले गणित, भूगोल, ग्राम इतिहास, आदि ग्रामवासी के शिक्षा का पाठ्यक्रम हो। गांधी जी शिक्षकों द्वारा दिए जा रहे अनाप–शनाप एवं अनचाही शिक्षा के खिलाफ थे जो कि आगे चलकर बच्चों को निरीहमशीन बना दे। गांधी जी का कहना था कि बच्चों की शिक्षा शारीरिक काम पर आधारित हो और यह कार्य शिक्षक के देखरेख में हो। गांधी जी लड़के–लड़कियों को पढाई के दौरान ही सीना–पिरोना और रसोई का काम सीखने व बाप–दादा के काम धंधा का काम सीखने व अर्थोपार्जन के लिए कहते थे। गांधी जी उच्च शिक्षित व्यक्ति से उम्मीद करते थे कि डिग्री मिलने के

बाद उन्हें आगे अतिरिक्त ज्ञान व प्रशिक्षण हासिल नहीं करना पड़े। बल्कि अपनी शिक्षा के समय प्राप्त व्यावसायिक ज्ञान से गुजारा कर लें और भविष्य में ये ज्ञान कभी भी अनुपयोगी साबित नहीं हो।

संदर्भ–सूची

1. गांधी, एम.के. (1962). विलेज स्वराज (संग्रहकर्ताः एच.एम. व्यास). अहमदाबाद : नवजीवन मुद्रणालय (पृ.40–41, 84–92)।
2. गांधी, एम.के. (1968). द स्टोरी ऑफमाई एक्सपेरीमेंट्स विथट्रुथः एन ऑटोबायोग्राफी. अहमदाबाद : नवजीवन पब्लिशिंग हाउस (पृ.139, 169, 177, 466)।
3. गांधी, मोहन दास करमचंद (1950). सच्ची शिक्षा (अनुवादकः राम नारायण चौधरी), अहमदाबाद : नवजीवन मुद्रणालय (पृ. 3, 32–33, 40, 48, 67, 95, 105, 109, 126, 181, 183, 283)।
4. गांधीजी (1946). रचनात्मक कार्यक्रम : उसका रहस्य और उसका स्थान. अहमदाबाद : नवजीवन मुद्रणालय (पृ.11, 39–44, 62, 80, 90)।
5. नवजीवन (1927). महात्मा गाँधी द्वारा संपादित पत्र/पत्रिका 'नवजीवन', दिनांक–25 सितंबर 1927 को प्रकाशित।
6. यंग इंडिया (1928). महात्मा गाँधी द्वारा संपादित पत्र/पत्रिका 'यंग इंडिया', दिनांक–2 अगस्त 1928 को प्रकाशित।
7. हरिजन (1921). महात्मा गाँधी द्वारा संपादित पत्र/पत्रिका 'हरिजन', दिनांक–1 सितंबर 1921 को प्रकाशित।
8. हरिजन (1929). महात्मा गाँधी द्वारा संपादित पत्र/पत्रिका 'हरिजन', दिनांक–21 फरवरी 1929 को प्रकाशित।
9. हरिजन (1933). महात्मा गाँधी द्वारा संपादित पत्र/पत्रिका 'हरिजन', दिनांक–1 दिसंबर 1933 को प्रकाशित।
10. हरिजन (1936). महात्मा गाँधी द्वारा संपादित पत्र/पत्रिका 'हरिजन', दिनांक–19 दिसंबर 1936 को प्रकाशित।
11. हरिजन (1937 अ). महात्मा गाँधी द्वारा संपादित पत्र/पत्रिका 'हरिजन', दिनांक–28 अगस्त 1937 को प्रकाशित।
12. हरिजन (1937 ब). महात्मा गाँधी द्वारा संपादित पत्र/पत्रिका 'हरिजन', दिनांक–31 जुलाई 1937 को प्रकाशित।
13. हरिजन (1937 स). महात्मा गाँधी द्वारा संपादित पत्र/पत्रिका 'हरिजन', दिनांक–8 मई 1937 को प्रकाशित।
14- हरिजन (1937 द).महात्मा गाँधी द्वारा संपादित पत्र/पत्रिका 'हरिजन', दिनांक–11 सितंबर 1937 का प्रकाशित।
15- हरिजन (1940). महात्मा गाँधी द्वारा संपादित पत्र/पत्रिका 'हरिजन', दिनांक–22 जून 1937 को प्रकाशित।
16- https://hi.wikipedia.org/wiki/महात्मा_गांधी
17- https://en.wikipedia.org/wiki/Vocational_education
18- https://sstmaster.com/mahatma-gandhi-ka-siksha-darshan/